

अध्याय- पंचम  
शोध सारांश, निष्कर्ष एवं  
सुझाव

# अध्याय –पंचम

## शोध सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

- 5.1 प्रस्तावना
- 5.2 समस्या कथन
- 5.3 शोध के चर
- 5.4 अध्ययन के उद्देश्य
- 5.5 अध्ययन की परिकल्पना।
- 5.6 न्यादर्श चयन की प्रक्रिया
- 5.7 शोध में प्रयुक्त उपकरण
- 5.8 शोध संबंधी उपकरण का निर्माण
- 5.9 शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीय
- 5.10 शोध निष्कर्ष
- 5.11 सूचना एवं सुझाव
  - 5.11.1 शिक्षक के लिए सुझाव
  - 5.11.2 अभिभावक के लिए सुझाव
  - 5.11.3 विद्यार्थियों के लिए सुझाव
  - 5.11.4 आगे संशोधन के लिए सुझाव

## अध्याय - पंचम

### शोध सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

#### 5.1 प्रस्तावना:-

प्रकरण चार के अनुसार प्रदत्तों का विश्लेषण इस प्रकार किया गया है। इसके अनुसार निम्न निष्कर्ष निकाले गये हैं।

#### 5.2 समस्या कथन :-

“कम्प्यूटर सहायक शिक्षण से विद्यार्थियों की निष्पत्ति पर होनेवाले प्रभाव का अध्ययन”

#### 5.3 शोध के चर:-

शोध में स्वतंत्र एवं आश्रित चर इस प्रकार रखे गये:-

##### ❖ स्वतंत्र चर :-

लिंगगत (छात्र, छात्राएँ)

विद्यालय (शासकीय)

##### ❖ आश्रित चर :-

निष्पत्ति

#### 5.4 अध्ययन के उद्देश्य:-

लघुशोध के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये:-

1. कम्प्यूटर सहायक शिक्षण के अंतर्भाव से कक्षा-8वीं के विद्यार्थियों की निष्पत्ति चार होनेवाले प्रभाव का अध्ययन करना।

2. कम्प्यूटर सहायक शिक्षा के अंतर्भाव से कक्षा-8वीं के छात्रों की निष्पत्ति पर होनेवाले प्रभाव का अध्ययन करना।
3. कम्प्यूटर सहायक शिक्षण के अंतर्भाव से कक्षा-8वीं को छात्राओं की निष्पत्ति पर होने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
4. कम्प्यूटर सहायक शिक्षण के अंतर्भाव से कक्षा-8वीं के छात्र एवं छात्राओं की निष्पत्ति पर होने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

### 5.5 अध्ययन की परिकल्पनाएँ:-

लघुशोध प्रबंध की शून्य परिकल्पनाएँ निम्नलिखित हैं।

1. कम्प्यूटर सहायक शिक्षण के अंतर्भाव से कक्षा-8वीं के विद्यार्थियों की निष्पत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. कम्प्यूटर सहायक शिक्षण के अंतर्भाव से कक्षा-8वीं की छात्राओं की निष्पत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. कम्प्यूटर सहायक शिक्षण के अंतर्भाव से कक्षा-8वीं के छात्रों की निष्पत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

### 5.6 न्यादर्श चयन की प्रक्रिया:-

प्रस्तुत शोध में अनुसंधानकर्ता ने न्यादर्श का सोद्देश्य विधि से चयन किया। जिसमें सुरत शहर की एक विद्यालय के 80 विद्यार्थियों को लिया गया। अनुसंधान में माध्यमिक विद्यालय के उन विद्यार्थियों को लिया गया है, जो विद्यार्थी जिनको कम्प्यूटर की प्राथमिक जानकारी थी।

## प्रदत्तों के संकलन में प्रयुक्त विद्यालय

क्र.	संस्था का नाम	छात्र	छात्राएँ	योग
1.	श्री डी.वी.डी.पटेल हाईस्कूल धोलीकुई	40	40	80

### 5.7 शोध में प्रयुक्त उपकरण:-

प्रवर्तमान लघुशोध समस्या के अध्ययन के लिए निम्न उपकरणों का उपयोग किया गया।

#### ❖ कम्प्यूटर (फ्लोपी)(सी.डी.):-

“ विद्यार्थियों को अध्यापन कार्य करवाने हेतु।

#### ❖ प्रश्नपत्र:-

विद्यार्थियों का मूल्यांकन करने हेतु।

#### ❖ जवाबवही:-

विद्यार्थियों के प्रश्नपत्र का उत्तर लिखावट करवाने हेतु।

### 5.8 लघुशोध प्रबंध संबंधी उपकरण का निर्माण:-

लघुशोध प्रबंध संबंधी उपकरणों का निर्माण निम्न प्रकार से किया गया।

#### ❖ कम्प्यूटर की सी.डी.:-

विद्यार्थियों को कम्प्यूटर सहायक शिक्षण प्रदान करने के लिए SCERT द्वारा प्रकाशन की गई सी.डी. का प्रयोग किया गया। जिसमें कक्षा-8 के विज्ञान एवं टेक्नॉलोजी विषय का चयन करके कक्षा अध्यापन कार्य करवाया गया।

## ❖ प्रश्नपत्र:-

विद्यार्थियों के कक्षा मूल्यांकन के लिए अनुसंधानकर्ता ने मार्गदर्शन कक्षा तथा विषय निष्ठांत के साथ चर्चा करके प्रश्नपत्र का निर्माण किया गया।

## ❖ जवाबवही:-

विद्यार्थियों का मूल्यांकन करने के लिए जवाबवही विद्यालय की ओर से प्रदान की गई जिसका प्रयोग मूल्यांकन कार्य के लिए किया गया।

### 5.9 प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु प्रयुक्त सांख्यिकी:-

लघुशोध कार्य हेतु प्रदत्तों का विश्लेषण करने के लिए निम्नलिखित सांख्यिकीय का उपयोग किया है।

- मध्यमान
- प्रमाणिक विचलन
- टी मान

### 5.10 शोध निष्कर्ष:-

1. नियंत्रित समूह का मध्यमान 22.66 तथा प्रायोगिक समूह का मध्यमान 17.83 है। दोनों समूहों का क्रांतिक अनुपात 9.11 है, अर्थात् 0.01 स्तर पर सार्थक है। इस प्रकार शिक्षण की परंपरागत व्याख्यान पद्धति की अपेक्षा आधुनिक शिक्षण पद्धति याने संगणक सहायक शिक्षण पद्धति अधिक प्रभावशाली है।

2. नियंत्रित समूह (छात्रों) का मध्यमान 18.25 तथा प्रायोगिक समूह (छात्रों) का मध्यमान 21.25 है। दोनों समूहों का 'टी' मूल्य 4.08 है, अर्थात् 0.01 स्तर पर सार्थक है। इस प्रकार शिक्षण का परंपरागत व्याख्यान पद्धति की अपेक्षा आधुनिक शिक्षण पद्धति याने संगणक सहायक शिक्षण पद्धति अधिक प्रभावशाली है।
3. नियंत्रित समूह (छात्राओं) का मध्यमान 17.3 तथा प्रायोगिक समूह (छात्राओं) का मध्यमान 20.01 है दोनों समूहों का 'टी' मूल्य 3.73 है, अर्थात् 0.01 स्तर पर सार्थक है। इस प्रकार शिक्षण की परंपरागत व्याख्यान पद्धति की अपेक्षा आधुनिक शिक्षण पद्धति याने संगणक सहायक शिक्षण पद्धति अधिक प्रभावशाली है।
4. उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार विज्ञान विषय के प्रभावशाली अध्ययन के लिए संगणक कार्यक्रम अधिक उपयुक्त हैं।

## 5.11 सूचना एवं सुझाव:-

### 5.11.1 शिक्षक के लिए सुझाव:-

1. शिक्षकों को विविध विषयों पर कम्प्यूटर सहायक शिक्षण देना चाहिए। तथा विद्यार्थियों को कम्प्यूटर सहायक शिक्षण के लिए प्रेरित करना चाहिए।
2. विज्ञान गणित तथा भाषा आदि विषयों में आवश्यकता अनुसार कम्प्यूटर सहायक शिक्षण देना चाहिए। और अधिक से अधिक समय कम्प्यूटर पर बैठकर विद्यार्थियों को अध्ययन करने देना चाहिए और उसे सहायता देनी चाहिए।

उपरोक्त सूचनाओं का शिक्षकों ने उपयोग किया तो अध्यापन तथा अध्ययन अधिक प्रभावी होने में अवश्य मदद मिलेगी।

### 5.11.2 अभिभावकों के लिए सुझाव:-

1. बच्चों को कम्प्यूटर सहायक शिक्षण के लिए अभिभावक कों को प्रोत्साहित करें तथा उनके लिए आर्थिक सहायता करनी चाहिए।
2. अभिभावकों ने अगर अपने बच्चों को कम्प्यूटर सहायक शिक्षण के माध्यम से अध्ययन करना सिखाया तो उनके व्यक्तित्व विकास पर निश्चित परिणाम दिखाई देगा। विज्ञान तथा अन्य विषय में अधिक प्रगति कर सकेंगा।

### 5.11.3 विद्यार्थियों के लिए सुझाव:-

1. “स्व अध्ययन करने से अध्ययन अधिक प्रभावशाली रहता है।” यह सूत्र ध्यान में रखकर विद्यार्थियों को स्वयं कम्प्यूटर सहायक शिक्षण के माध्यम से अध्ययन करना सीखना चाहिए।
2. कम्प्यूटर सहायक शिक्षण कोई कठिन कार्य नहीं है। किन्तु शिक्षकों का मार्गदर्शन लेना चाहिए।
3. कम्प्यूटर सहायक शिक्षण से अध्ययन करना अधिक महत्वपूर्ण है। यह पद्धति अधिक प्रभावशाली है। इस पद्धति के अनुसार तैयार किये गये विषयों को चिरकालीन याद के रूप में रखा जाता है। इसलिए विद्यार्थियों को यह पद्धति अधिक उपयोगी है। और इस पद्धति से अध्यापन तथा अध्ययन निश्चित रूप से प्रभावशाली होगा।

इस प्रकार इस सूचना का पालन शिक्षक, अभिभावक तथा विद्यार्थी करें तो अध्यापन तथा अध्ययन निश्चित रूप से प्रभावशाली होगा।



#### 5.11.4 आगे संशोधन के लिए सुझाव:-

इस संशोधन में संशोधनकर्ता ने कम्प्यूटर सहायक शिक्षण का उपयोग उपयोग विज्ञान तथा टेक्नॉलोजी विषय के लिए किया है। किन्तु इन विषयों के अलावा भी अन्य घटकों पर संगणक कार्यक्रम तैयार कर सकते हैं। तथा तैयार कार्यक्रम उपलब्ध हैं, जैसा कि भाषा समाजशास्त्र, विज्ञान, गणित आदि। इन विषयों में भी कम्प्यूटर सहायक शिक्षण कर सकते हैं, सुनिश्चित उत्कृष्ट अध्यापन कार्य के लिए बहुत सारी शाखा में कम्प्यूटर सहायक शिक्षण का उपयोग किया जा सकता है। आगे संशोधनकार्य के लिए इसकी ओर ध्यान रखकर इस विषय को अधिक संशोधन करने के लिए चुनना चाहिए।